A Report on the Training Programme under NMPB Funded project on "Cultivation of High Valued Temperate Medicinal Plants" held at Mansari, Haripur, Manali (H.P.) (23.09.2014)

Himalayan Forest Research Institute, Shimla organized one day training and demonstration programme on **'Cultivation of High Valued Temperate Medicinal Plants'** at Mansari, Manali (H.P.) on 23.09.2014 under the 'National Medicinal Plants Board' funded project. Dr. V.P. Tiwari, Director, HFRI inaugurated the training programme. Before the start of training programme, he inaugurated the newly constructed office complex of M/s Nanda Medicinal Plants Exports. In his inaugural address, he briefed about the importance of temperate medicinal plants and stressed the need to cultivate and conserve these valuable species as currently about 90 percent of plants are illegally and unscientifically extracted from Himalayan forests. He asked the farmers to diversify the traditional agriculture practices by incorporating medicinal plants cultivation in their farmlands to augment rural income. He also told about the prospects of NMPB support in cultivation of high valued medicinal plants. In the end, the Director highlighted the importance of such training programmes, especially to motivate the farmers for the commercial cultivation of medicinal plants in temperate Himalayas for income generation.

In the beginning, Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F and Coordinator of the training programme welcomed all the 46 participants from Kullu and Lahual & Spiti districts of Himachal Pradesh and briefed about the day's event. The day's proceedings started with the presentation by Sh. Jagdish Singh, Scientist-E highlighting the activities of the institute. Sh. P.S. Negi, Scientist-B talked about the importance and proper identification of temperate medicinal plants. Thereafter, Dr. Sandeep Sharma, Scientist-F explained the nursery techniques for raising Atish (*Aconitum heterophyllum*), Chora (*Angelica glauca*), Kukti (*Picrorhiza kurroa*) and Mushakbala (*Valeriana jatamasi*) and also detailed about the NMPB funded project being implemented by HFRI, Shimla. He told the farmers that HFRI will provide planting material under this project to them for initiating cultivation in their field and also briefed on various marketing issues pertaining to medicinal plants, composting and vermi-composting techniques, organic farming etc for the benefit of participants. Sh. Jagdish Singh, Scientist-E discussed about the inter-cultivation of medicinal plants in orchards of temperate areas of Himachal Pradesh.

In the afternoon, participants were taken to Brundhar field research station of HFRI located 6 Km from Manali town to get the first hand information regarding medicinal plants cultivation. All the resource persons and field staff of the station demonstrated various techniques related to medicinal plants cultivation. To benefit the participants in the field, open discussion was held among participants and the experts. During the discussion, participants freely interacted with the resource persons and their queries pertaining to various issues regarding nursery production and cultivation of temperate medicinal plants were duly addressed through expert opinion of the resource persons. Sh. Nand Lal Sharma, medicinal plants cultivator-cum-exporter also shared his valuable experiences with delegates pertaining to various problems while dealing with marketing of temperate medicinal plants. At the end of the day of long training programme, Dr. Sandeep Sharma extended formal Vote of Thanks to the participants. Extensive coverage was given by the print and electronic media to this training programme.

Glimpses of Training and Demonstration programme

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला (हि.प्र.)
एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला (हि.प्र.)
एक दिवसीय प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन
दिनांक: 23 सितम्बर, 2014
सौजन्य :- राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड, नई दिल्ली।

हिमाचल दस्तक, 24, सितम्बर, 2014

औषधीय क्रय-विक्रय भवन का उद्घाटन

लुप्त होने की कगार पर हैं औषधीय जड़ी-बूटियां : तिवारी

हिमाचल दस्तक। मनाली

कुल्लू। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के शिविर में लोगों ने कई प्रकार की ज्ञानवर्धक जानकारी हासिल की।

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वीपी तिवारी ने औषधीय क्रय-विक्रय भवन का उद्घाटन किया गया। इस अवसर पर यहां आयोजित प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए निदेशक वीपी तिवारी ने कहा कि दवाइयों के लिए अधिक प्रयोग में लाई जा रही जड़ी-बूटियां लुप्त हो रही हैं।

उन्होंने कहा कि उनके संरक्षण और संवर्धन को लेकर किसान जागरूक हों तथा जड़ी-बूटी को खेतों में उगाकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ करना चाहिए। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला से आए वैज्ञानिक डॉ. जगदीश सिंह ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के बारे में जानकारी दी संस्थान की गतिविधियों से अवगत करवाया। उन्होंने वन ककडी की नर्सरी एवं खेती, फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती बारे भी किसानों को बताया। डॉ. पीएस नेगी ने समशीतोषण हिमालयी औषधीय पौधों की पहचान एवं उपयोग बारे किसानों को जागरूक किया। वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने उच्च पर्वतीय भागों में पाए जाने वाले महत्वपूर्ण औषधीय पौधों जैसे पतीश, कडू, मुश्कबाला तथा चोरा की व्यवसायिक कृषिकरण की तकनीक बारे बताया। उन्होंने जैविक कृषि कंपोस्ट एवं वर्मी कंपोस्ट बनाने की विधियां एवं नर्सरी में उर्वरक प्रबंधन और औषधीय पौधों के व्यवसाय से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियां दी। दोपहर बाद विशेषज्ञ डाक्टरों एवं किसानों ने जगतसुख में भ्रूणधार नर्सरी के क्षेत्र का भ्रमण किया।

दैनिक जागरण, 24, सितम्बर, 2014

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के अधिकारियों के साथ लाहुल व कुल्लू के किसान। जागरण

अमर उजाला, 24 सितम्बर, 2014

जड़ी-बूटियों का महत्व बताया

हिमालयन वन अनुसंधान का मन्सारी गांव में प्रशिक्षण कार्यक्रम

अमर उजाला ब्यूरो

हरिपुर (कुल्लू)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला की ओर से हरिपुर क्षेत्र के मन्सारी गांव में राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड के सौजन्य से प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

इसमें कुल्लू और लाहौल स्पीति जिले के गांव बुरूआ, जगतसुख, बनारा, मन्सारी, हरिपुर, गजां, बंजार, जालमां, तलजो, उदयपुर, तिंगरेट, गोपा व चिमरेट आदि के किसानों ने भाग लिया। प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ अनुसंधान संस्थान के निदेशक डा. वीपी तिवारी ने किया। उन्होंने किसानों को समशीतोष्ण औषधीय पौधों के बारे में जानकारी दी। उन्होंने बताया कि कुल्लू और लाहौल स्पीति में करीब 32 प्रकार की जड़ी बूटियों की खेती हो सकती है। जड़ी बूटियों के लिहाज से इन क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं।

अवैज्ञानिक दोहन से जड़ी बूटियां विलुप्त होने की कगार पर

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश से हर साल लगभग 2500 से 3000 टन प्रतिवर्ष जड़ी बूटियां दूसरे प्रदेशों में भेजी जाती हैं। इसमें 90 प्रतिशत जड़ी बूटियां जंगलों से प्राप्त की जाती हैं, लेकिन जड़ी बूटियों के अवैज्ञानिक तरीके से लगातार दोहन से यह विलुप्त होने की कगार पर हैं, इसलिए संस्थान द्वारा लोगों को जड़ी बूटियों का कृषिकरण कर इन्हें संरक्षित करने का प्रयास किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि संस्थान किसानों को तकनीकी जानकारी भी उपलब्ध करवाएगा। इस दौरान डा. वीपी तिवारी ने नंदा मेडिकल प्लांट एक्सपोर्ट कं पनी के कार्यालय का भी उद्घाटन किया। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के वैज्ञानिक डा. संदीप शर्मा, डा. जगदीश सिंह, डा. नेगी और पीतांबर सिंह ने किसानों से अपने विचार साझा किए।

दिव्य हिमाचल, 24, सितम्बर, 2014

जड़ी-बूटी उगाकर बढ़ाएं आमदनी

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक का आह्वान

■ निजी संवाददाता, मनाली

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला के निदेशक वीपी तिवारी ने औषधीय क्रय-विक्रय भवन का उद्घाटन किया गया। प्रशिक्षण शिविर को संबोधित करते हुए निदेशक वीपी तिवारी ने कहा कि दवाइयों के लिए अधिक प्रयोग में लाई जा रही जड़ी-बूटी लुप्त हो रही है, उनके संरक्षण और संवर्धन को लेकर किसान जागरूक हों तथा जड़ी-बूटी को खेतों में उगाकर अपनी आर्थिकी को सुदृढ़ करें। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला से आए वैज्ञानिक डाक्टर जगदीश सिंह ने हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान के बारे में जानकारी दी, संस्थान की गतिविधियों से अवगत करवाया। उन्होंने वन ककड़ी की नर्सरी एवं खेती, फलदार एवं वानिकी पौधों के मध्य औषधीय पौधों की खेती बारे भी किसानों को बताया। डाक्टर पीएस नेगी ने समशीतोष्ण हिमालयी औषधीय पौधों की पहचान एवं उपयोग बारे किसानों को जागरूक किया। वैज्ञानिक डाक्टर संदीप शर्मा ने उच्च पर्वतीय भागों में पाए जाने वाले महत्त्वपूर्ण औषधीय पौधों जैसे पतीश, कड़ू, मुरकबाला तथा चोरा की व्यवसायिक कृषिकरण की तकनीक बारे बताया।

उन्होंने जैविक कृषि कंपोस्ट एवं वर्मी कंपोस्ट बनाने की विधियां एवं नर्सरी में उर्वरक प्रबंधन और औषधीय पौधों के व्यवसाय से संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियां दीं। दोपहर बाद विशेषज्ञ डाक्टरों एवं किसानों ने जगतसुख में भ्रूणधार नर्सरी के क्षेत्र का भ्रमण किया तथा महत्त्वपूर्ण औषधीय पौधों की नर्सरी तैयार करने की तकनीकों बारे जानकारी हासिल की।